## विचार बिन्दु

चरित्र वृक्ष है और प्रतिष्ठा उसकी छाया। - अब्राहम लिंकन

# धूम्रपान से याददाश्त कम होने के साथ अल्जाइमर रोग का खतरा बना रहता है

ग्लोबल ओपन साइंस पत्रिका में हाल ही प्रकाशित एक अध्ययन के मुताबिक धूम्रपान करने वालों में तेजी से याददाश्त कम होना और अल्जाइमर रोग का खतरा अधिक रहता है। सेंलुइस में वाशिंगटन यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन के शोधकर्ताओं ने कहा, चूंकि उम्र के साथ लोगों के मस्तिष्क का आहार स्वाभाविक रूप से कम हो जाता है। धूम्रपान प्रभावी रूप से मस्तिष्क को समय से पहले बूढ़ा कर देता है। शोध के दौरान अलग-अलग आयु वर्ग के 32,094 लोगों के मस्तिष्क का अध्ययन किया गया। शोधकर्ताओं का कहना है कि धूम्रपान न सिर्फ दिल और फेफड़ों को प्रभावित करता है, बल्कि मस्तिष्क पर भी स्थायी प्रभाव डालता है। जीन की भी इसमें अहम भूमिका होती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार धूम्रपान मसूड़ों की बीमारी के लिए नंबर एक जोखिम कारक है। धूम्रपान दंत पट्टिका में बैक्टीरिया के प्रकार को बदल सकता है, जिससे बैक्टीरिया की संख्या बढ़ सकती है जो अधिक हानिकारक हैं। धूम्रपान से मसूड़ों में रक्त प्रवाह कम हो जाता है और दांतों के ऊतकों का समर्थन होता है और उनमें सूजन होने की संभावना अधिक होती है। मसूड़ों की बीमारी धूम्रपान न करने वालों की तुलना में धूम्रपान करने वालों में अधिक तेजी से बदतर हो जाएगी। रक्त प्रवाह कम होने के कारण, धूम्रपान करने वालों को धूम्रपान न करने वालों के रूप में ज्यादा मसूड़ों के बारे में चेतावनी के लक्षण नहीं मिल सकते हैं। भारत के साथ ही सम्पूर्ण विश्व में कुछ सालों में धूम्रपान और उससे पीड़ित लोगों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। इस गंभीर लत ने हजारों लोगों को विभिन्न बीमारियों के साथ अकाल मौत के मुंह में धकेल दिया। धूम्रपान सेहत के लिए हानिकारक होता है। ये बात टीवी, न्यूज पेपर, होर्डिंग में दिखने वाले विज्ञापनों में कई बार देखने को मिलती है। यहां तक कि सिगरेट के पैकेट पर भी लिखा होता है कि सिगरेट पीना हानिकारक है और इससे कर्करोग होता है। लेकिन इसके बावजूद लड़के और लड़किया धड़ल्ले से सिगरेट फूंकते जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया के करीब 125 देशों में तंबाकू पैदा होती है और हर साल करीब 5.5 खरब सिगरेट का उत्पादन होता है। एक अरब से ज्यादा लोग इसका सेवन करते हैं। धूम्रपान का घातक प्रभाव खांसी, गले में जलन, सांस लेने में परेशानी और कपड़ों की दुर्गंध के साथ आरंभ होता है। दुनियाभर में हर साल 80 लाख लोगों की मौतें धूम्रपान की वजह से होती है। यह हर कोई जानता है की सिगरेट के धुएं से धूम्रपान आपकी सेहत के लिए हानिकारक है। मगर यह सब लोग नहीं जानते है कि सेकेंड-हैंड स्मोकिंग भी आपके लिए जानलेवा है। सेकेंड हैंड स्मोकिंग से हमारा तात्पर्य है सिगरेट पीने वाले से ज्यादा खतरा उसको होता है जो सिगरेट पीने वाले के पास बैठा होता है और सिगरेट के धुएं का सेवन करता है। सेंकड हैंड स्मोकिंग से बच्चों और बड़ों दोनों को गंभीर और जानलेवा बीमारी होने की आशंका रहती है। धूम्रपान और सेकेंड हैंड धुएं के संपर्क में आने से हर साल दुनिया भर में लगभग 13 लाख लोगों की मौत हो जाती है। भारत में 100 मिलियन से अधिक धूम्रपान करने वाले हैं और इनके साथ, गैर धूम्रपान करने वालों को घर पर, काम पर और सार्वजनिक स्थानों पर सेकेंड हैंड धुएं का सामना करना पड़ता है। सेकेंड हैंड धुआं सात हजार से अधिक रसायनों का घातक मिश्रण है, जो धूम्रपान न करने वाले बच्चों और वयस्कों में समय से पहले मौत और बीमारी का कारण बनता है और इसके संपर्क में आने का कोई ज्ञात सुरक्षित स्तर नहीं है। विभिन्न शोधों से जो परिणाम सामने आये हैं वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि धूम्रपान, रक्त संचार की व्यवस्था पर हानिकारक प्रभाव डालता है। धूम्रपान का सेवन और न चाहते हुए भी उसके धूएं का सामना, हृदय और मस्तिष्क की बीमारियों का महत्वपूर्ण कारण है। इन अध्ययनों में पेश किये गये आंकड़े इस बात के सूचक हैं कि कम से कम सिगरेट का प्रयोग भी जैसे एक दिन में पांच सिगरेट या कभी कभी सिगरेट का सेवन अथवा धूम्रपान के धूएं से सीधे रुप से सामना न होना भी हृदय की बीमारियों से ग्रस्त होने के लिए पर्याप्त है। धूम्रपान के धूएं में मौजूद पदार्थ जैसे आक्सीडेशन करने वाले, निकोटीन, कार्बन मोनो आक्साइड जैसे पदार्थ हृदय, ग्रंथियों और धमनियों से संबंधित रोगों के कारण हैं। धूम्रपान का सेवन इस बात का कारण बनता है कि शरीर पर इन्सोलीन का प्रभाव नहीं होता है और इस चीज से ग्रंथियों एवं गुर्दे को क्षति पहुंच सकती है। धूम्रपान के सेवन के हानिकारक प्रभावों से केवल लोगों के स्वास्थ्य को खतरा नहीं है बल्कि इससे आर्थिक क्षति भी पहुंचती है विशेषकर यह निर्धन लोगों की निर्धनता में वृद्धि का कारण है। 20 सिगरेट अथवा 15 बीड़ी पीने वाला एवं करीब 5 ग्राम सुरती, खैनी आदि के रुप में तंबाकू प्रयोग करने वाला व्यक्ति अपनी आयु को 10 वर्ष कम कर लेता है। इससे न केवल उम्र कम होती है, बल्कि शेष जीवन अनेक प्रकार के रोगों एवं व्याधियों से ग्रसित हो जाता है। सिगरेट, बीड़ी पीने से मृत्यु संख्या, न पीने वालों की अपेक्षा 50 से 60 वर्ष की आयु वाले व्यक्तियों में 65 प्रतिशत अधिक होती है। यही संख्या 60 से 70 वर्ष की आयु में बढ़कर 102 प्रतिशत हो जाती है। सिगरेट, बीड़ी पीने वाले या तो शीघ्रता से मौत की गोद में समा जाते हैं या फिर नरक के समान जीवन जीने को मजबूर होते हैं। धूम्रपान के खतरे को देखते हुए सरकार को भी इसे प्रतिबंधित कर देना चाहिए ताकि न बजेगा बांस और न बजेगी बांसुरी।

**विभिन्न शोधों से जो परिणाम सामने आये हैं वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि धूम्रपान, रक्त संचार की व्यवस्था पर हानिकारक प्रभाव डालता है। धूम्रपान का सेवन और न चाहते हुए भी उसके धूएं का सामना, हृदय और मस्तिष्क की बीमारियों का महत्वपूर्ण कारण है। इन अध्ययनों में पेश किये गये आंकड़े इस बात के सूचक हैं कि कम से कम सिगरेट का प्रयोग भी जैसे एक दिन में पांच सिगरेट या कभी कभी सिगरेट का सेवन अथवा धूम्रपान के धूएं से सीधे रुप से सामना न होना भी हृदय की बीमारियों से ग्रस्त होने के लिए पर्याप्त है।**

**अतिथि संपादक**
**बाल मुकुन्द ओझा**
**वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार**

# इतिहास के पन्नों में सिमटा ''सांभर'' का वास्तविक नाम ''शाकम्भर''

## शिवाजी के बेटे संभाजी के नाम पर शाहजी ने व्यंजन का नाम सांभर रखा तभी से अपभ्रंश हुआ सांभर शाकंभर, सपादलक्ष नाम का भी इतिहास में उल्लेख है

**मैं** सांभर नहीं प्राचीन शाकम्भर हूं। मेरा इतिहास अति प्राचीन है। बिजौलिया और हर्ष के शिलालेखों से मेरे वजूद का पता चलता है। मेरे हृदय में बसा मां शाकम्भरी का मन्दिर मेरे वास्तविक नाम का गवाह है। यहां के राजाओं को बड़े गर्व से शाकम्भर नरेश पुकारा जाता था। मेरी उम्र के साथ ही बदली सभ्यता और संस्कृति ने कब मेरे वास्तविक नाम को गौण कर दिया मुझे भी अब कुछ याद नहीं है। शाकम्भर के बाद में सपादलक्ष, शम्बर और वर्तमान में मुझे अब सांभर के नाम से पहचान मिली। मुझे गहरी वेदना है कि मेरे वास्तविक नाम को लौटाने के लिए अभी तक कोई शूरवीर साहस नहीं जुटा पा रहा है।

सांभर लावणीय झील में स्थित मां शाकंभरी का प्राचीन मंदिर ( फाइल फोटो )।

- सरकारी दस्तावेजों में सांभर के स्थान पर शाकम्भर को नहीं मिली मान्यता

पाश्चात्य संस्कृति का एक खाद्य पदार्थ और जंगल में पाया जाने वाले एक शाकाहारी पशु को जब मेरे नाम से ही पुकारा जाता है तो वेदना और बढ़ जाती है। मुझे आज भी विश्वास है कि एक दिन मेरा इतिहास फिर से दोहराया जाएगा और मेरा वास्तविक नाम भी। पुराणों में भी उल्लेख मिलता है कि राजा वृषपर्वा शासक रहे तो उनकी पुत्री शर्मिष्ठा एवं गुरू शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी को मेरे आंचल में जगह मिली। मुझे हर्ष है कि मेरे पास ही बृहस्पति के पुत्र कच ने दैत्य गुरू शुक्राचार्य से संजीवनी विद्या हासिल कर मेरा गौरव बढ़ाया। भले ही मेरा नाम अपभ्रंश कर दिया गया हो लेकिन मेरी गाथा और महत्ता आज भी तनिक कम नहीं हुई है।

यूं तो मेरे वास्तविक इतिहास में बहुत कुछ छिपा है, तो बहुत कुछ उजागर होने को तड़प रहा है। शिलालेखों में सन् 551 से 1192 तक मुझे चौहान साम्राज्य की राजधानी दर्शाया गया है। छह शताब्दी से अधिक समय तक चौहान वंशीय बत्तीस शासकों को मेरी शरणस्थली मिली तो वासुदेव चौहान को प्रथम शासक होने का खिताब मिला वहीं पृथ्वीराज चौहान तृतीय मेरे यहां अन्तिम हिन्दू सम्राट रहे। सन् 1192 में पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु के करीब दो वर्ष बाद मौहम्मद गौरी का शासन रहा और तकरीबन 349 साल तक मुगल शासकों का जबरदस्त बोलबाला रहा। आईने अकबरी में भी मुगल शासक सम्राट अकबर का विवाह सन् 1521 में आमेर के राजा बिहारीमल की पुत्री के साथ यहां होना बताकर मेरे वजूद को सिद्ध किया है। बादशाह जहांगीर द्वारा बनवाई गई माता के दरबार के पिछवाड़े मौजूद छतरी भी एक अनूठी मिसाल से कम नहीं है। इसके बाद सन् 1541 में जोधपुर के राजा मालदेव का शासन रहा।

सन् 1562 में सन्त दादूदयाल ने झील के मध्य छः वर्ष तक कठोर तपस्या कर तपोभूमि बनाया। मेरे आंगन में जैन धर्मावलम्बियों ने भी अपना सन्देश फैलाया। सन् 1467 में जिनचन्दाचार्य कृत सिद्धान्त सार संठाह की प्रतिलिपि भी यहीं तैयार की गई। सन् 1693 में भट्टारक रत्नकीर्ति ने भी मेरे यहां कदम रखे। मुझे विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल के रूप न में भी अमिट पहचान मिली है। सन् 1708 में फिर से मुगल सल्तनत रही तथा यहां का हाकिम सैय्यद अली अहमद कहलाया। सन् 1708 में जब जोधपुर के राजा अजीत सिंह व आमेर के राजा जयसिंह थे तो दोनों ने मिलकर आक्रमण कर दिया और अपना आधिपत्य जमाया। मेरे 2/3 हिस्से पर जोधपुर राज्य की तथा 1/3 हिस्से पर आमेर राज्य की मुहर लगी और मैं उस वक्त दो भागों में बंट गई। लवणीय स्वाद के कारण कारण मराठों का मन भी ललचाया और उन्होंने भी आक्रमण की योजना बनाई तथा जयपुर व जोधुपर रियासत से चौथ वसूली करनी चाही। मराठों व पिण्डरियों ने मुझ पर आक्रमण किया तथा इसी दरमियान शेखावटी के भोमियों ने जयपुर रियासत के खिलाफ बिगुल बजा दी।

मजबूरन जयपुर व जोधपुर रियासत ने अंठोजी फौज की सहायता ली तथा सन् 1835 से 1844 तक अंठोजों ने फौज का खर्चा मेरे यहां पैदा होने वाले लवण की आय से वसूला। इसके बाद 1 जनवरी 1870 को जयपुर व जोधपुर रियासत ने मेरे तन से पैदा होने वाले नमक की खातिर मुझे अंठोजों के हवाले कर दिया और मेरी आजादी का गला घोंट दिया गया। मेरी तमाम गतिविधियों पर नजर रखी जाने लगी और अंठोज हुकूमत ने मेरा जमकर शोषण कर मेरा नाजायज फायदा उठाया। अंठोज हुकुमत के हिसाब से ही मुझ पर प्रशासनिक नियन्त्रण किया जाने लगा।

नतीजा यह हुआ कि जयपुर-जोधपुर के राजाओं क्षरा मुझ एवं मेरे अधीन बारह गांवों का प्रशासन व न्याय अलग अलग दोनों रियासतों के कानून के मुताबिक चलता था जिससे मेरी प्रजा को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता था। इससे निपटने के लिए दोनों जगहों के शासकों में न्याय व प्रशासन को सम्मिलित रूप से संचालित करने के उद्देश्य से शामलाती शासन की स्थापना की गई तथा उक्त व्यवस्था 1 फरवरी, 1925 से लागू की गई। अंठोज शासक बैंटिक के कार्यकाल में नमक के लदान के लिए झील के मध्य बिछाई गई पटरियां आज भी यथावत है, लेकिन रख रखाव और मरम्मत का दंश झेल रही है। आजादी के बाद राजस्थान राज्य का गठन हुआ तो मुझे राजस्थान के जयपुर जिले का सबसे पहले उपखण्ड होने का दर्जा मिला और मेरा विस्तार अधिक होने से सबसे बड़े उपखण्ड के तौर पर भी शौहरत मिली। यह भी सच है कि मुझे सन्तों और वीरों की पावन भूमि होने का गौरव हासिल है। जनश्रुति के अनुसार देवयानी और शर्मिष्ठा की सत्य दास्तान के लिए भी मुझे प्रसिद्धि मिली। महाभारत, श्रीमद्भागवत में भी मेरा वर्णन होना आनन्ददायक है। मेरे भीतर समाए इतिहास को ढूंढ ने के लिए सर्वप्रथम सन् 1184 में टी.एन. हाण्डले ने तथा इसके पश्चात पुनः सन् 1936- 38 में उत्खनन कर मेरी प्राचीनता को और उजागर किया। मेरे विराट हृदय से उस वक्त यह साबित हो गया था कि तीसरी शती ई.पूर्व तक मैं कितनी आबाद थी। उत्खनन के दौरान दबे अवशेषों में आहट, हिन्द-यूनानी, इण्डो ससैनियन, कुषाण एवं यौद्येय कालीन दो सौ सिक्कों के अलावा शुक-कुषाण एवं गुप्तकालीन मृण्मूर्तियां मिली।

इस दौरान पुरानी सभ्यताओं के दबे अधूरे मकानों का निकलना भी किसी अजूबे से कम नहीं था और आज भी नए सिरे से उत्खनन की बाट जोह रहे हैं। भारत सरकार की ओर से इसके बाद मेरे इस हिस्से पर राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक चस्पा कर मुझे यूं ही वीरानी में छोड़ दिया। नलियासर खेड़ा नामक यह स्थल मेरा ही पुराना स्वरूप है। मैंने बहुत कुछ दिया है, लेकिन आज भी जब मेरे नाम को उलाहना मिलती है तो दिल टूट जाता है। मुझे आज भी सरकार से मेरी ओर दृष्टिपात कर यहां उद्योग धन्धों की स्थापना करने, जिले का दर्जा दिए जाने तथा पर्यटन के रूप में विकसित किए जाने का इन्तजार है।

# जोधपुर पोलो-2023 : 61 कैवलरी ने टूर्नामेंट का पहला मैच जीता

**जोधपुर, (कासं)।** जोधपुर पोलो एवं इक्यूस्टेरियन इंस्टीट्यूट, जोधपुर के तत्वावधान में महाराजा गजसिंह स्पोर्ट्स फाउण्डेशन पोलो मैदान, एयरफोर्स रोड, पाबूपुरा में चल रहे 24वें जोधपुर पोलो सीजन 2023 में बुधवार 20 दिसम्बर से राजपूताना एण्ड सेन्ट्रल इण्डिया कप (8 गोल) टूर्नामेंट शुरु हुआ। पहले दिन दो मैच खेले गए। पहला मैच दोपहर दो बजे 61 कैवलरी-रॉयल इनफील्ड व इण्डियन नेवी के बीच खेला गया जिसमें जीत के पर्याय बन चुके ध्रुवपाल गोदारा ने कैवलरी टीम की ओर से खेलते हुए आठ गोल कर टीम की जीत सुनिश्चित की। कैवलरी ने साढे पांच के मुकाबले दस गोल कर साढे चार गोल के अन्तर से विपक्षी टीम को हराया।

दूसरा मैच दोपहर 3 बजे इण्डियन एयरफोर्स लोंगेवाला कप के प्रदर्शन मैच के तहत खेला गया जिसमें जोधपुर-जयपुर टीम ने वी पोलो-चान्दना पोलो को पांच के मुकाबले नौ गोल कर चार गोल के अन्तर से जीत दर्ज की। प्रदर्शन मैच से पूर्व मैदान के ऊपर भारतीय वायुसेना ने आकर्षक एयर शो प्रस्तुत किया। प्रदर्शन मैच की विजेता टीम को मुख्य अतिथि एयर मार्शल नर्मदेश्वर तिवारी ए.वी.एस.एम, वी.एम., ए.ओ.सी. इन सी, एस.डब्ल्यू.एस.सी. इण्डियन एयरफोर्स ने कप व ट्रॉफियां प्रदान की। मैच से पूर्व आर्मी पाईप बैण्ड ने मैदान में आकर्षक धुनों की प्रस्तुति दी।

मैच के दौरान बीजेएस स्कूल के बच्चे भी मैच में उपस्थित थे, जिन्होंने पोलो मैच का लुत्फ उठाया। जोधपुर पोलो एवं इक्यूस्टेरियन इंस्टीट्यूट, जोधपुर के सचिव इन्द्रजीत सिंह नाथावत ने बताया कि पहले मैच में 61 कैवलरी टीम की ओर से खेलते हुए टीम के 3 हैण्डीकेप के खिलाड़ी ध्रु वपाल गोदारा ने बेहद शानदार प्रदर्शन करते हुए टीम के लिए आठ गोल किए। ध्रुव ने पहले व चौथे चक्कर में दो-दो व दूसरे चक्कर में एक और तीसरे चक्कर में तीन गोल कर विपक्षी टीम पर जबरदस्त दबाव बनाया। साथी खिलाड़ी 3 हैण्डीकेप के ही अंगद कलान ने भी दूसरे व तीसरे चक्कर में एक-एक गोल किया। मुकाबले में आधे गोल की शुरुआती बढ़त के साथ खेलते हुए इण्डियन नेवी टीम के चार हैण्डीकेप के खिलाड़ी साऊथ अफ्रीका के जोहान फिलीप ने पहले, तीसरे व चौथे चक्कर में एक-एक कुल तीन गोल, दो हैण्डीकेप के खिलाड़ी ए.पी. सिंह ने चौथे चक्कर में एक गोल व लोकेन्द्रसिंह ने दूसरे चक्कर में एक गोल किया।

सचिव नाथावत ने बताया कि दोपहर 3 बजे खेला गया दूसरा मैच बतौर इण्डियन एयरफोर्स लोंगेवाला कप के प्रदर्शन मैच खेला गया। इस मैच में जोधपुर-जयपुर टीम की ओर से हिम्मतसिंह बेदला ने चार, महाराजा जयपुर ने दो व लांस वाटसन ने तीन गोल किए। चार हैण्डीकेप के लांस वाटसन ने पहले चक्कर मे दो व तीसरे चक्कर में एक गोल, हिम्मतसिंह बेदला ने दूसरे चक्कर में दो व तीसरे व चौथे चक्कर में एक-एक गोल व चार हैण्डीकेप के खिलाड़ी एच.एच. महाराजा जयपुर सवाई पद्मनाभसिंह ने पहले व चौथे चक्कर में एक-एक गोल किया।

मुकाबले में वी पोलो-चान्दना पोलो टीम की ओर से कुल पांच गोल किए गये। टीम के मुकेशसिंह ने पहले व चौथे चक्कर में एक-एक गोल, चार हैण्डीकेप खिलाड़ी सिद्धांत शर्मा ने दूसरे व चौथे चक्कर में एक-एक गोल व निमित मेहता ने चौथे चक्कर में एक गोल किया मैच की कॉमेन्ट्री राजवी शैलेन्द्रसिंह व अंकुर मिश्रा ने की। मैच के अम्पायर अर्जेन्टीना के निकोलस स्कोर्टीचीनी व दक्षिण अफ्रीका के रोडनी ज्योफरी गुटरिज रहे जबकि रैफरी गोंजालो यजोन व अंगद कलान थे। मैच के दौरान पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव, मेजर जनरल नरपतसिंह राजपुरोहित वीएसएम, मेजर जनरल शेरसिंह, कर्नल सिद्धार्थसिंह रोहित, गिरेन्द्रसिंह, महाराजा मदनसिंह, कर्नल भंवरसिंह खींची, कर्नल मनोहरसिंह कोरना, राजेन्द्रसिंह, हर्षवर्धनसिंह भांवरी, दिग्विजयसिंह भांवरी, कल्पना चाम्पावत, अंकुर मिश्रा, वीर विजयसिंह राजेन्द्रसिंह लीलिया सहित अनेक देशी-विदेशी पोलो प्रेमी मैदान में उपस्थित थे। लोंगेवाला कप के प्रदर्शन मैच से पूर्व व पुरस्कार वितरण से पूर्व भारतीय वायुसेना के सुखोई-30 विमान सहित एडवांस लाईट हेलिकॉप्टर रूद्र व लाईट काम्बेट हेलिकॉप्टर प्रचंड मैदान के ऊपर से गुजरे जिससे मैदान में उपस्थित पोलो प्रेमी बेहद रोमांचित हो गये। सचिव इन्द्रजीत सिंह नाथावत ने बताया कि गुरुवार को राजपूताना एण्ड सेन्ट्रल इण्डिया कप (8 गोल) टूर्नामेंट के तहत इण्डियन नेवी व पोलो हेरिटेज टीमों के बीच दोपहर 3 बजे मैच खेला जायेगा।

राजपूताना एण्ड सेन्ट्रल इण्डिया कप ( 8 गोल ) टूर्नामेंट में दो मैच खेले गये।

- राजपूताना एण्ड सेन्ट्रल इण्डिया कप (8 गोल) टूर्नामेंट में हुये मैच
- प्रदर्शन मैच से पूर्व मैदान के ऊपर भारतीय वायुसेना ने आकर्षक एयर शो प्रस्तुत किया

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

### राशिफल 21 दिसम्बर 2023

**मागशीर्ष मास शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, गुरुवार, विक्रम सम्वत 2080, रेवती नक्षत्र रात्रि 10.09 तक, वारियान योग दिन 11.27 तक, कौलव करण प्रातः 9.38 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10.09 से मेष राशि में संचार करेगा।**
**ग्रह स्थिति - सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु, मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।**
**आज स्वार्थसिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण रात्रि रहेगा। रवियोग सम्पूर्ण दिन रात है।**
**आज महानन्दा नवमी, श्री हरि जयंती है पंचक रात्रि 10.09 से 2.41 समाप्त होंगे।**
**श्रेष्ठ चौघडिया - शुभ सूर्योदय से 8.33 तक, चर 11.07 से 12.25 तक, लाभ-अमृत 12.25 से 2.59 तक, शुभ 4.16 से सूर्यास्त तक।**
**राहुकाल - 1.30 से 3.00 तक सूर्योदय 7.15 सूर्यास्त 5.34**

**मेष**

मेष - घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग दौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**सिंह**

सिंह - अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलंब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा

**धनु**

घर-परिवार के कार्यों के कारण भाग दौड़ रहेगी। अथितियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**वृष**

आर्थिक-वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

**कन्या**

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेगी। आय में वृद्धि होगी। धार्मिक-सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं।

**मकर**

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

**मिथुन**

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। अटके हुए कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

**तुला**

व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरी पेशा व्यक्तियों को भाग दौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कुंभ**

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

**कर्क**

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

**वृश्चिक**

परिवार में शुभ मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य के संबंध में सोच विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

**मीन**

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बडेगी। परिवार में धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

# उत्तर-पश्चिम रेलवे ने 667 किलोमीटर ट्रेक का विद्युतीकरण किया

**जोधपुर, (कासं)।** उत्तर-पश्चिम रेलवे पर वर्ष 2023-24 में नवम्बर माह तक 667 किलोमीटर ब्राडगेज लाइनों का विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण किया गया। उत्तर-पश्चिम रेलवे पर अब तक कुल 4634 किलोमीटर रेलमार्ग का विद्युतीकरण कार्य पूर्ण किया जा चुका है।

उत्तर-पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी कैप्टन शशिकिरण के अनुसार महाप्रबन्धक अमिताभ के कुशल दिशा-निर्देशन में उत्तर-पश्चिम रेलवे पर रेल विद्युतीकरण के कार्य तीव्र गति से किए जा रहे है। इस रेलवे पर विद्युतीकरण के कार्य को विगत वर्षों के बजट में प्राथमिकता प्रदान की गई है। उत्तर-पश्चिम रेलवे पर अब तक 4634 रूट किलोमीटर रेल लाइन पर विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। उत्तर-पश्चिम रेलवे पर वर्ष 2023-24में नवम्बर माह तक कुल 667 किलोमीटर रेलमार्ग का विद्युतीकरण किया गया है, जिसमें डीडवाना-डेगाना (63 किलोमीटर), श्रीगंगानगर-गजसिंहपुर (68 किलोमीटर), पीपाड़ रोड-मेड़ता रोड (56 किलोमीटर), समदडी-जालौर (57 किलोमीटर), खारवाचांदा-जयसमंद रोड़ (38 किलोमीटर), बाडमेर-गडरा रोड (81 किलोमीटर), पीपाड रोड-राई का बाग (43 किलोमीटर), भीखमखोर-फलौदी (56 किलोमीटर), गडरा रोड-मुनाबाव (39 किलोमीटर), बीकानेर-लालगढ (9 किलोमीटर), लालगढ-नोखडा (83 किलोमीटर) और नोखडा-फलौदी (74 किलोमीटर) रेलमार्गों का विद्युतीकरण के कार्य पूरा किया गया है। उत्तर-पश्चिम रेलवे पर अब तक 4634 किलोमीटर रेलखण्ड के विद्युतीकरण का कार्य पूरा किया गया है। वर्तमान में उत्तर पचिम रेलवे पर 138 जोड़ी रेलसेवाएं विद्युत ट्रेक्शन पर संचालित की जा रही है। उत्तर-पश्चिम रेलवे पर सभी रेलमार्गों के विद्युतीकरण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं।

- अब तक 4634 किलोमीटर रेलखण्ड के विद्युतीकरण का कार्य पूरा किया है

# वर्षों बाद शुरू हुआ बस स्टैंड बंद होने के कगार पर

**राजगढ़, (निसं)।** राजगढ़ कस्बे का बस स्टैंड पथ परिवहन निगम की सेवाओं के अभाव एवं अधिकारियों की अनदेखी से इन दोनों बंद होने के कगार पर है। कस्बे के बस स्टैंड पर तीन-चार बसों तक ही सुविधा सीमित कर रह गई है। जानकारी के अनुसार राजगढ़ वेलफेयर सोसाइटी एवं पूर्व विधायक के प्रयास से करीब 1 वर्ष पूर्व राजगढ़ बस स्टैंड पर संचालन शुरू होने के बाद करीब डेढ़ दर्जन बसों का आवागमन से यात्रियों को राहत मिली थी। मगर इन दिनों तीन-चार बसें आने से यात्री परेशान हैं। निगम प्रबंधन की ओर से दो कर्मचारियों को बस स्टैंड पर लगा देने से बस स्टैंड से चालू चलने लगा था। इधर राहत शिविरों के चालू होने के पश्चात एक कर्मचारी को राहत शिविर में लगा देने एवं निगम प्रबंधन की ओर से देखरेख के अभाव में बसों के चालक परिचालक बाईपास से बसों का संचालन करने लगे। इस समस्या के कारण बस स्टैंड पर यात्री बसों की इंतजार में ठगा सा महसूस करने लगे।

- बस स्टैंड पर तीन-चार बसों तक की ही सुविधा सीमट कर रह गई है